Hindi

Explore–Journal of Research
ISSN 2278 – 0297 **(Print)**
ISSN 2278 – 6414 **(Online)**
© Patna Women's College, Patna, India
http://www.patnawomenscollege.in/journal

वैश्वीकरण का हिन्दी पर प्रभाव

• **सुरभि कुमारी** • **शाम्भवी कुमारी** • **अमृता राज**
• **मंजुला सुशीला**

Received : November 2019
Accepted : March 2020
Corresponding Author : Manjula Sushila

Abstract : *वैश्वीकरण का अर्थ है 'विश्वव्यापी पारस्परिक जुड़ाव,' जो विचार, पूँजी, वस्तु और लोगों के प्रवाह से उत्पन्न होता है।*

वैश्वीकरण एक बहुआयामी अवधारणा है। इसके आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक सांस्कृतिक प्रभाव हैं। सांस्कृतिक रूप से रहन–सहन, वेश–भूषा, भाषा इत्यादि पर प्रभाव पड़ रहा है।

अंग्रेजी वर्चस्व के युग में जब दुनिया की कई भाषाएँ लुप्त हो रही हैं, ऐसे में हिन्दी ने अपने स्वरूप में परिवर्तन लाकर स्वयं को जीवंत किया है। आज हम हिन्दी के कई रूप से अवगत हो रहे है जैसे – विज्ञापन की हिन्दी, खेल – कूद की हिन्दी, बोलचाल की हिन्दी, फिल्मों की हिन्दी, कार्यालयी हिन्दी, संचार माध्यम की हिन्दी, बाजार की हिन्दी, मीडिया की हिन्दी, तकनीक की हिन्दी इत्यादि । अपने परंपरागत रूप से इतर हिन्दी इन नए रूपों में खूब पुष्पित – पल्लवित हो रही है। इसके अतिरिक्त हिन्दी की विदेशी शैलियाँ भी विकसित हो रही हैं।

भारत की सांस्कृतिक पहचान हिन्दी भाषा नए दौर में नए स्वरूप में जीवंत हुई है। बाजार की भाषा बनी हिन्दी भारत के कोने–कोने से लेकर विश्व के कोने–कोने तक प्रसारित हो रही है।

मीडिया, तकनीक, इंटरनेट इत्यादि हर क्षेत्र में हिन्दी धूम मचा रही है, लेकिन वैश्वीकरण ने इसके साथ–साथ हिन्दी के सामने कई चुनौतियाँ भी खड़ी की हैं। वैश्वीकरण की चुनौतियों से निपटने के लिए आवश्यक है कि हिन्दी को जनोन्मुखी, रोजगारपरक, सरल–सुगम बनाया जाये ताकि यह विश्व मंच पर ताकतवर भाषा के रूप में अपनी उपस्थिति दर्ज करा सके।

संकेत-शब्द (Keywords) – *बहुआयामी अवधारणा, सांस्कृतिक पहचान, चुनौतियाँ, जनोन्मुखी, विश्व भाषा।*

सुरभि कुमारी
B.A. III year, Hindi (Hons.), Session: 2017-2020,
Patna Women's College, Patna University, Patna,
Bihar, India

शाम्भवी कुमारी
B.A. III year, Hindi (Hons.), Session: 2017-2020,
Patna Women's College, Patna University, Patna,
Bihar, India

अमृता राज
B.A. III year, Hindi (Hons.), Session: 2017-2020,
Patna Women's College, Patna University, Patna,
Bihar, India

मंजुला सुशीला
अध्यक्षा, हिन्दी विभाग, पटना वीमेंस कॉलेज,
बेली रोड, पटना–800 001, बिहार, भारत
E-mail : manjula71pwc@gmail.com

भूमिका:

वर्तमान युग वैश्वीकरण का है। हम क्या खाते हैं, क्या पहनते हैं, क्या सोचते हैं, क्या बोलते हैं, सभी पर वैश्वीकरण का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष प्रभाव है।

वर्तमान युग पूँजीवाद और बाजारवाद का है। भारत बड़ा बाजार है। अतः वैश्वीकरण के दौर में भारतीय बाजार की जैसे ताकत बढ़ेगी, वैसे भारतीय भाषाओं और हिन्दी की भूमिका व्यापक होगी। हिन्दी आज बाजार की भाषा है, विज्ञापनों की भाषा है। इसका प्रसार अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हो रहा है। मॉरीशस, सूरीनाम, जमैका इत्यादि देशों में करीब पचास फीसदी लोग

हिन्दी का प्रयोग करते हैं। हॉलीवुड फिल्मों में हिन्दी का प्रयोग हो रहा है। ऑस्कर से सम्मानित अंग्रेजी फिल्म का शीर्षक 'अवतार' हिन्दी भाषा का शब्द है। संचार माध्यमों ने हिन्दी को तीव्र गति से प्रचारित-प्रसारित किया है। वर्तमान में 50 करोड़ से अधिक व्यक्ति हिन्दी समझते और बोलते हैं। हिन्दी को प्रथम भाषा के रूप में बोलने वालों की संख्या के आधार पर हिन्दी मंडारिन, अंग्रेजी, स्पेनिश के बाद चौथे स्थान पर आती है। पब्लिक लैंग्वेज सर्वे ऑफ इंडिया के ताजा आंकड़े बताते हैं कि वृद्धि की मौजूदा रफ्तार से हिन्दी पचास सालों में अंग्रेजी को पीछे छोड़ देगी। यह सब हिन्दी की भाषायी सामर्थ्य, समृद्धि, विविधता, विस्तार, जीवंतता, वैज्ञानिकता आदि के कारण है, जो वैश्वीकरण का प्रभाव है। वैश्वीकरण के कारण हिन्दी और अंग्रेजी की मिश्रित भाषा प्रचलन में है, जिसे 'हिंग्रेजी' नाम से जानते हैं और यह फल-फूल रही है।

इसके साथ-साथ वैश्वीकरण ने हिन्दी की राह में कुछ अवरोध खड़े किए हैं, जिससे हिन्दी को संघर्ष करना है तथा विकास-पथ के नए सोपानों पर चढ़ना है।

उद्देश्यः-

सामान्य - हिन्दी आज विश्व स्तर पर प्रचारित - प्रसारित होने के बावजूद अपने ही देश में उपेक्षित है। समाज का हर वर्ग इसे तिरस्कार एंव उपेक्षा की दृष्टि से देखता है। आम जनमानस के मानसिकता में परिवर्तन लाना ही इस परियोजना 'वैश्वीकरण का हिन्दी पर प्रभाव' का सामान्य उद्देश्य है।

विशिष्ट - इस परियोजना कार्य का विशिष्ट उद्देश्य वैश्वीकरण के बाद हिन्दी के स्वरूप में आए परिवर्तन का विश्लेषण कर वैश्विक भाषा के रूप में इसकी महत्वपूर्ण स्थिति को रेखांकित करना है, ताकि इस पश्चिमी सभ्यता एवं भाषा के अंधानुकरण के दौर में अपनी सांस्कृतिक और राष्ट्रीय पहचान हिन्दी भाषा को संरक्षण प्रदान कर सके ।

अध्ययन पद्धतिः

परियोजना के लिए शोध- प्रविधि की द्वितीयक पद्धति का प्रयोग किया गया है। तथ्यों के संग्रह के लिए पूर्व शोध ग्रंथों, संबंधित पुस्तक एवं पत्र-पत्रिकाओं की मदद ली गई है।

वैसे तो 'हिन्दी' शब्द अपने में व्यापक अर्थ समेटे हुए है पर 'हिन्दी' शब्द का संकुचित अर्थ है 'खड़ीबोली साहित्यिक हिन्दी' जो आज हिन्दी प्रदेशों की सरकारी भाषा है, पूरे भारत की राष्ट्रभाषा है, समाचार-पत्रों और फिल्मों में जिसका प्रयोग होता है, जो हिन्दी प्रदेश में शिक्षा का माध्यम है और जिसे 'परिनिष्ठित', मानक हिन्दी आदि नामों से अभिहित करते हैं। खड़ीबोली हिन्दी ही आज 'हिन्दी' के रूप में प्रतिष्ठित है। भाषिक स्तर पर यह दिन-प्रतिदिन परिमार्जित एवं व्यवस्थित हो रही है तथा रचनात्मक स्तर पर यह विश्वस्तरीय भाषा के रूप में उभरकर सामने आ रही है।

भारतीय संस्कृति तथा भारत की भाषाएँ किसी भी युग में एकाकी नहीं रहीं वरन् यह शेष विश्व के साथ जुड़ी रहीं। पहले हिन्दी अरबी और फारसी के साथ मिश्रित होकर 'हिन्दवी' के रूप में प्रतिष्ठित हुई, तो आज अंग्रेजी वर्चस्व के युग में अंग्रेजी के साथ मिश्रित होकर 'हिंग्रेजी' के रूप में प्रचारित-प्रसारित हो रही है। डॉ0 भोलानाथ तिवारी के अनुसार ''किसी भाषा के प्रचार क्षेत्र में जैसे-जैसे विस्तार होता है, उसके एकाधिक रूप विकसित होने लगते हैं।'' (तिवारी 16)

हिन्दी भाषा के प्रचार क्षेत्र में विस्तार हो रहा है, वह वैश्विक भाषा बनने की राह पर है। अतः उसके कई रूप विकसित हो रहे हैं। जिनमें से प्रमुख है - मानक हिन्दी, व्यापार वाणिज्य की हिन्दी, खेल कूद की हिन्दी, जनसंचारीय हिन्दी, साहित्यिक हिन्दी, संसदीय हिन्दी, बोल-चाल की हिन्दी, कार्यालयी हिन्दी इत्यादि।

वैश्वीकरण : एक अवधारणा :

वैश्वीकरण का अर्थ है 'विश्वव्यापी पारस्परिक जुड़ाव, जो विचार, पूँजी, वस्तु और लोगों के प्रवाह से उत्पन्न होता है। 'वैश्वीकरण' शब्द नया हो सकता है, किन्तु इसकी अवधारणा पुरानी है। प्राचीन काल से ही संस्कृतियाँ आपस में समाहित हो रही हैं। चूँकि वर्तमान युग सूचना प्रौद्योगिकी का युग है, जिससे हर प्रवाहों (विचार, पूँजी, वस्तु और लोगों) की गति तीव्र एवं धरातल विस्तृत है, इसलिए वर्तमान विश्व को 'वैश्वीकृत विश्व' माना जाता है।

वैश्वीकरण एक बहुआयामी परिघटना है, जिसके आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक प्रभाव हैं। आर्थिक वैश्वीकरण में आयात एवं निर्यात के लिए अर्थव्यवस्था से अवरोधों को हटाते हैं। राजनीतिक वैश्वीकरण में देश अन्य देशों के साथ राजनीतिक रूप से जुड़ता है, राज्य की शक्ति कम होती है।

सांस्कृतिक वैश्वीकरण में संस्कृतियों का समांगीकरण होता है।

सन् 1991 में भारत में वित्तीय संकट से उबरने और आर्थिक वृद्धि की दर बढ़ाने के लिए नई आर्थिक नीति लागू की गई, जिसमें वैश्वीकरण, उदारीकरण एवं निजीकरण शामिल थे। इसके पश्चात् भारत में पूँजी, विचार, वस्तु एवं लोगों के प्रवाह की दर तीव्र हो गयी।

वैश्वीकरण बहुत विवादित मुद्दा है। वामपंथी विचारधारा के लोग इसके आर्थिक पक्ष का विरोध करते हैं। दक्षिणपंथी विचारक इसके सांस्कृतिक प्रभाव का विरोध करते हैं, जिसमें पश्चिमी संस्कृति, पश्चिमी वेश-भूषा एवं भाषा को बढ़ावा मिलता है। वैश्वीकरण वर्तमान समय का यथार्थ है, हम इससे मुँह नहीं मोड़ सकते ।

अत: हमें न्यायसंगत वैश्वीकरण के लिए संघर्ष करना है, ताकि सभी को समान अवसर मिल सके।

स्वतंत्रता के बाद हिन्दी की विकास यात्रा :

स्वाधीनता संग्राम के दौरान हिन्दी न केवल पूरे देश में एकता का वाहक बन स्वाधीनता प्राप्ति की माध्यम थी वरन् वह इस आंदोलन का लक्ष्य भी थी। स्वतंत्रता के बाद देश के जनमानस का आदर करते हुए हिन्दी को देवनागरी लिपि में राजभाषा के रूप में अपनाया गया तथा संविधान में भाग 5, 6 और 17 में हिन्दी के बारे में स्पष्ट प्रावधान किया गया। राजभाषा के विकास हेतु विभिन्न केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, केन्द्रीय हिन्दी प्रशिक्षण संस्थान, तकनीकी कक्ष इत्यादि की स्थापना की गई है।

वैश्वीकरण का हिन्दी पर प्रभाव :

कबीर ने कहा है, भाषा बहता नीर है। वैसे तो भाषा सदैव संक्रमणशील रही है किन्तु पिछले 20-30 वर्षों में परिवर्तन इतनी द्रुत गति से हुआ है कि भाषा के क्षेत्र में एक मौन क्रांति आ गई है। राजनीतिक आर्थिक प्रभाव के साथ ही वैश्वीकरण ने भाषा, जीवनशैली, विचारधारा इत्यादि सभी को प्रभावित किया है। कई भाषा अंग्रेजी के वर्चस्व के कारण लुप्त हो रही है तो कई के स्वरूप में परिवर्तन आ रहा है।

वैश्वीकरण का प्रभाव केवल हिन्दी के विश्व व्यापी स्वरूप पर ही नहीं हुआ है, वरन् हिन्दी के अखिल भारतीय स्वरूप में भी परिवर्तन आया है। हिन्दी आज देश के उन भागों में भी फैल रही है, जहाँ हिन्दी अछूती-अनजानी थी। जैसे- दक्षिण भारत, उ0-पू0 भारत। एक सर्वे के अनुसार 5 साल में दक्षिण में हिन्दी सीखने वाले 22 प्रतिशत बढ़े हैं। 2011 के जनगणनना के अनुसार देश की कुल आबादी में हिन्दी (मातृभाषा के रूप में) बोलनेवाले की संख्या 43.63 प्रतिशत हो गई है, जो 2001 में 41 प्रतिशत थी। 1991 (जब भारत में आर्थिक वैश्वीकरण को स्वीकार किया गया) से हिन्दी बोलनेवालों की संख्या में जबरदस्त उछाल आया है। हिन्दी अपने राष्ट्रीय स्वरूप में दक्खिनी हिन्दी, हैदराबादी हिन्दी, अरूणाचली हिन्दी आदि में विस्तारित हो गई है।

यह दक्षिण भारतीय भाषाओं और अंग्रेजी के साथ मिश्रित कर प्रयोग में लाई जा रही है, जो उसका भाषायी विस्तार ही है। हिन्दी अपने परंपरागत रूप से इतर विज्ञापन की भाषा बनी है, बाजार की भाषा बनी है, जो वैश्वीकरण का परिणाम ही है।

जब उत्तर भारत से दक्षिण भारत की ओर रोजगार या प्रशिक्षण इत्यादि की तलाश में पलायन हो रहा है, बंगलुरू सूचना प्रौद्योगिकी के हब के रूप में विकसित हुआ है, जिसके कारण यहाँ के लोग वहाँ आधुनिक प्रौद्योगिकी, शिक्षण, प्रशिक्षण, रोजगार इत्यादि के लिए जा रहे हैं, तो साथ में अपनी भाषा हिन्दी को भी ले जा रहे हैं। 2001 से 2011 के बीच में तमिलनाडू में हिन्दी बोलने वालों की संख्या लगभग दोगुनी हो गई है।

हिन्दी के अगर वैश्विक स्वरूप की बात करें तो देखते हैं कि वैश्वीकरण ने हिन्दी को भारत की राजभाषा के पद से ऊपर उठाकर एक वैश्विक भाषा की पहचान दी है। पचौरी जी ने लिखा है- ''हिन्दी समकालीन भूमंडलीकरण के दौर में तेजी से एक सशक्त, सर्वत्र उपस्थित विश्व भाषा बन चली है।'' (पचौरी - 50)

वर्तमान में हिन्दी बोलनेवालों की संख्या अंग्रेजी से ज्यादा है। दुनिया में 50 करोड़ से ज्यादा लोग हिन्दी समझते और बोलते हैं। वर्तमान में 170 देशों में हिन्दी की पढ़ाई हो रही है। भारत के बाहर लगभग 600 विद्यालय, महाविद्यालय हैं, जहाँ हिन्दी की पढ़ाई होती है। अमेरिका, चीन, जापान, फ्रांस, रूस इत्यादि देशों में बहुत जोर-शोर से हिन्दी प्रसारित हो रही है। भारत तथा पाकिस्तान को छोड़कर विश्व में ऐसे कई देश हैं जो

हिन्दी को मातृ भाषा के रूप में प्रयोग करते हैं – बांग्लादेश, नेपाल, मॉरीशस, फीजी, गुयाना, सूरीनाम, म्यांमार, भूटान, बहरीन, कुवैत, ओमान, कतर, संयुक्त अरब अमीरात, दक्षिण अफ्रिका, श्रीलंका आदि। हिन्दी की कई विदेशी शैलियाँ भी हैं – सूरनामी हिन्दी, फीजी बात, नेटाली, पार्‌या इत्यादि। इंटरनेट पर हिन्दी 94 प्रतिशत की दर (सबसे तेज दर) से बढ़ रही है। हर पाँच में से एक व्यक्ति हिन्दी में सामग्री ढूँढ़ रहा है। विदेशों में भी कई पत्र-पत्रिकाएँ हिन्दी में प्रकाशित हो रही हैं – भारत दर्शन, सरस्वती पत्र, अभिव्यक्ति, अनुभूति, अन्यथा, गर्भनाल, प्रवासी टुडे इत्यादि। वैश्वीकरण ने हिन्दी के लिए अवसरों के द्वार खोले हैं जिसके निम्नलिखित कारण हैं – भारत एक उभरती हुई महाशक्ति है, विश्व के लिए एक बड़ा बाजार है जिससे विश्व के अन्य देश हिन्दी भाषा के प्रति आकर्षित हो रहे हैं। भारतीय फिल्म एवं गानों की हिन्दी को प्रचारित – प्रसारित करने में मुख्य भूमिका है। हिन्दी में बनने वाली फिल्मों की संख्या सबसे अधिक है। टेलीविजन पर अनेक चैनल्स हिन्दी में कार्यक्रम दिखा रहे हैं। विदेशी भाषाओं की फिल्में हिन्दी में डब की जा रही है। सभी बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ अपने विज्ञापन हिन्दी में दे रही हैं जैसे- ठंडा मतलब कोकाकोला, मैगी- दो मिनट में खुशियाँ। अभी हाल ही में महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय वर्धा द्वारा हिन्दी माध्यम में एम0बी0ए0 का पाठ्‌यक्रम आरंभ किया गया। ''स्टार न्यूज, स्टार स्पोटर्स'' जैसे अंग्रेजी परस्त चैनल्स भी हिन्दी भाषा में आने लगे हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ के आधिकारिक भाषाओं मे हिन्दी शामिल नहीं है, पर विश्व हिन्दी सम्मेलन और अन्य समूहों की ओर से लगातार इसकी माँग उठ रही है। संयुक्त राष्ट्र संघ ने हिन्दी समाचार सेवा शुरू की है। ये सम्मान पाने वाली हिन्दी पहली गैर यू0एन0 एशियाई भाषा है।

विश्व हिन्दी सम्मेलन लगातार हिन्दी के प्रचार – प्रसार का कार्य कर रहा है। अब तक ग्यारह सम्मेलन हो चुके हैं। 2018 में इसका आयोजन मॉरीशस में किया गया था तथा 12 वाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन 2021 में मध्यप्रदेश के देवास में किया जाएगा।

इतिहास गवाह है कि जिस देश का प्रभुत्व होता है, उसी देश की भाषा फलती-फूलती है। आज भारत उभरती हुई विश्व शक्ति है। पीपीपी (क्रय शक्ति समता) के आधार पर विश्व की तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था है। जनसंख्या के आधार पर दूसरी सबसे बड़ी मानव शक्ति है, तो जाहिर सी बात है कि भारत की भाषा विश्व भाषा बनने की होड़ में है।

आज हिन्दी भाषा अपने पारंपरिक रूप से इतर एक वाणिज्यिक विषय, एक रोजगार परक विषय के रूप में विकसित हुई है। इसमें नई तरह की चीजें हैं जैसे- अनुवाद कला, अभिव्यक्ति कौशल इत्यादि।

संयुक्त राष्ट्र संघ के आँकड़े के अनुसार दुनिया के विभिन्न देशों में डेढ़ करोड़ से अधिक भारतीय प्रवासी रह रहे हैं। प्रवासियों की दृष्टि से भारत सबसे आगे है। ये भारतीय प्रवासी जहाँ जाते हैं, वहाँ अपनी सभ्यता, संस्कृति, अपनी भाषा इत्यादि को भी अपने साथ ले जाते हैं। इस प्रकार प्रवासी भारतीय हिन्दी के प्रचार- प्रसार में सहायता कर उसे विश्व भाषा बनाने की ओर अग्रसारित कर रहे हैं।

हिन्दी भाषा एवं तकनीकः

आधुनिक तकनीकी विकास में कम्प्यूटर का आविष्कार एक युगान्तकारी घटना है। आज कम्प्यूटरों का प्रयोग जीवन के हर क्षेत्र में हो रहा है। प्रांरभ में कम्प्यूटर का प्रयोग कार्य केवल अंग्रेजी भाषा में होता था, परंतु आज अंग्रेजी के साथ-साथ देवनागरी, चीनी, जापानी, हिब्रू और कोरियन जैसी जटिल लिपियों के लिए किया जा रहा है।

कम्प्यूटर के अत्यधिक प्रयोग से विश्वस्तर पर एक युगान्तकारी परिवर्तन आया है। जैसा कि हम देखते हैं कि कम्प्यूटर में प्रयोग होने वाली भाषाओं में से अंग्रेजी को आदर्श भाषा माना गया है, पर ''अमेरीकी वैज्ञानिक श्री रिक ब्रिग्ज की यह धारणा है कि संस्कृत भाषा कम्प्यूटर प्रोग्राम की दृष्टि से आदर्श भाषा है। इसलिए देवनागरी लिपि में कम्प्यूटर पर कार्य करना कठिन नहीं है किन्तु आवश्यक साफ्टवेयर के अभाव में सन् 1965 से पूर्व इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी।'' (मलहोत्रा 95)

हिन्दी सॉफ्टवेयर लोकलाइजेशन का कार्य सर्वप्रथम सी-डैक द्वारा 90 के दशक में किया गया था। वर्तमान में हिन्दी भाषा के लिए कई संगठन कार्य करते हैं – जैसे – सी डैक, गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान एंव अनेक गैर सरकारी संगठन जैसे सराय, इंडलिक्स इत्यादि। नवभारत वेब दुनिया, जागरण, भाषा इंडिया डॉट कॉम, हिन्दी

नेक्सर डॉट कॉम इत्यादि साइटों पर हिन्दी की सामग्री उपलब्ध है:-

1. ww.rajbhasha.nic.in
2. www.raajbhasha.com
3. www.indianlanguages.com
4. www.tdil.mit.gov.in
5. www.bharatdarshan.com इत्यादि ।

हम आज विज्ञापन से संबंधित लेख से लेकर खाता संबंधी एस0एम0एस0 हिन्दी में प्राप्त कर सकते हैं। माइक्रोसॉफ्ट, एप्पल वाले सिस्टम में पहले से ही यूनिकोड मंगल सहित कई देवानगरी यूनिकोड फॉन्ट उपलब्ध है । बहुप्रचलित विंडोज विस्टा व विंडोज + जैसे ऑपरेटिंग सिस्टम के साथ एम0एस0 वर्ड, पॉवर प्वाईंट, एक्सेल, नोटपैड जैसे कई सॉफ्टवेयर उपलब्ध हैं।

हिन्दी भाषा के विस्तार की दिशा, शब्दों का प्रवाह एवं निर्माण:

किसी भी भाषा का कोई सार्वकालिक रूप नहीं होता, वरन् वह स्वयं को दूसरी भाषाओं एवं बोलियों के शब्दों से समृद्ध करती है। हिन्दी भी दूसरी भाषाओं के शब्दों को अपनाकर अपनी शब्द संपदा में वृद्धि करती है।

हिन्दी के अधिकतर शब्दों की उत्पत्ति आर्यभाषा 'संस्कृत' से हुई है, पर हिन्दी ने अरबी, फारसी, अंग्रेजी, तुर्की आदि भाषाओं के शब्दों को भी आत्मसात किया हैं। वैश्वीकरण के दौर में प्रवाहों की गति तीव्र है, इसलिए शब्दों का प्रवाह (भाषाओं द्वारा अन्य भाषाओं के शब्दों को स्वीकार करना) भी तीव्र है। हिन्दी भी अरबी, फारसी, अंग्रेजी, फ्रेंच आदि भाषाओं के शब्दों को आत्मसात कर रही है तथा अन्य भाषाएँ भी हिन्दी के शब्दों को अपना रही हैं। ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी ने हिन्दी भाषा के कई शब्दों को अपना कर अंग्रेजी भाषा में शामिल किया है। जैसे- AVTAR (अवतार), GURU (गुरू), JUNGLE (जंगल), KARMA (कर्म), NIRVANA (निर्वाण), YOGA (योग) इत्यादि। हिन्दी में भी अन्य भाषाओं से शब्द आए हैं जैसे कम्प्यूटर, स्टेशन, हॉस्पिटल, इत्यादि अंग्रेजी के शब्द हैं, जिसका हिन्दी में आज धड़ल्ले से प्रयोग होता है, उसी प्रकार सिनेमा, रिर्पोताज आदि शब्द फ्रेंच भाषा के शब्दों से बने है। अरबी और फारसी से अनगिनत शब्द लिए गए है - इमारत, क़ानून, ईमानदारी इत्यादि। तुर्की भाषा के शब्द हैं - बहादुर, इन्सान, दुनिया, शीशा इत्यादि। पुर्तगाली भाषा से बने शब्द हैं - अलमारी, तौलिया, फालतू इत्यादि।

प्रयोजनमूलक हिन्दी के विभिन्न क्षेत्रों-प्रशासन, विधि, संचार, कम्प्यूटर, प्रौद्योगिकी, मानविकी, विज्ञान आदि में पारिभाषिक शब्दावली का निर्माण भी हो रहा है, जिसमें कई शब्द तो यूरोपीय भाषाओं से ग्रहण किए जा रहे हैं जैसे- रेडियो, मोटर, रेल, पेट्रोल इत्यादि।

कई विदेशी शब्दों का हिन्दीकरण हुआ है जैसे- ऑगस्ट-अगस्त, आयनोइजेशन- आयनीकरन इत्यादि। इस तरह लगातार हिन्दी अपनी शब्द संपदा में वृद्धि कर अपना विस्तार कर रही है, जो समय की माँग है, और जीवंतता की पहचान भी, क्योंकि कोई भी भाषा रूढ़ होकर अपना जनक्षेत्र नहीं बढ़ा सकती तथा विश्व स्तर पर प्रचारित-प्रसारित नहीं हो सकती। केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग इत्यादि संस्थाएँ इस दिशा में प्रयासरत हैं।

वैश्वीकरण के राह पर हिन्दी की चुनौतियाँ :

वैश्वीकरण ने हिन्दी भाषा को नए अवसर प्रदान किए है, तो इसके साथ-साथ कई प्रकार की चुनौतियाँ भी दी हैं। हिन्दी की यात्रा शुरू से ही अन्तर्विरोधों की यात्रा रही है। आज के वैश्वीकरण के परिदृश्य में भी हिन्दी के समक्ष कई प्रकार की चुनौतियाँ हैं। सूचना प्रौद्योगिकी तकनीक के युग में उन्हीं भाषाओं का वर्चस्व होगा, जो तकनीकी रूप से अव्वल होंगी। वैश्वीकरण के माहौल में अंग्रेजी का बोलबाला है। इस माहौल में हिन्दी ने स्वयं को एक नए अंदाज में जीवन्त किया है, वह है 'हिंग्रेजी', जो हिन्दी और अंग्रेजी का सम्मिश्रण है, जिसमें क्रिया और कारक हिन्दी के होते है, अन्य शेष सब अंग्रेजी के होते हैं। जैसे- उसकी पर्सनालिटी बहुत ऐटरैक्टिव है इत्यादि। वर्तमान में हिन्दी इसी 'हिंग्रेजी' के रूप में प्रचारित-प्रसारित हो रही है। अपनी मूल शब्द - संपदा से दूर हो रही है। हिन्दी के समक्ष चुनौती रोजगार को लेकर भी है, क्योंकि जितने नए प्रकार के रोजगार सृजित हुए हैं जैसे- बी0पी0ओ0, कॉल सेंटर इत्यादि सभी अंग्रेजीपरस्त हैं। इस प्रकार आर्थिक अवसर की कसौटी पर अंग्रेजी का पलड़ा भारी है। लोगों की मानसिकता को बदलना भी हिन्दी के लिए एक चुनौती है। आम तौर पर लोग हिन्दी को एक पिछड़ी भाषा समझते हैं। कृत्रिम, मशीनी, अव्यावहारिक अनुवाद ने हिन्दी को काफी नुकसान पहुँचाया

हैं। संघ लोक सेवा आयोग जैसी प्रतिष्ठित संस्थाएँ भी मशीनी अनुवाद का सहारा लेकर हिन्दी में प्रश्न पत्र उपलब्ध कराती हैं, जो काफी कठिन, अव्यावहारिक एवं कभी-कभी हास्यास्पद भी होता है। सत्ता और शासन के क्षेत्र में अंग्रेजी का दबदबा कायम है। संसद और राज-काज के कार्य अंग्रेजी भाषा में होते हैं जबकि संविधान में हिन्दी और अंग्रेजी दोनो भाषाओं को राज-काज की भाषा माना गया है।

निष्कर्षः

केवल भारत में ही नहीं, वरन हिन्दी विश्व मंच पर एक सशक्त भाषा बन कर उभरी है। वर्त्तमान में हिन्दी बोलने वालों की संख्या लागातार बढ़ रही है। चार दशकों में दक्षिण भारत में केवल हिन्दी बोलने वाले की संख्या में ही वृद्धि हुई है, अन्य भाषाओं में ऋणात्मक वृद्धि हुई है। 2001 से 2011 के बीच में तमिलनाडु में हिन्दी बोलने वालों की संख्या लगभग दोगुनी हो गई है। हिन्दी के महत्व को पूरी दुनिया स्वीकार कर रही है। हिन्दी अशिक्षित, गाँव-देहात की भाषा न रहकर ज्ञान, सत्ता और बाजार की भाषा बनी है। आज बाजार में पैठ बनाने का हिन्दी सबसे सरल माध्यम है। सुधीश पचौरी लिखते हैं, ''तथ्य यह है कि हिन्दी लगातार बढ़ रही है, फैल रही है और वह विश्वभाषा बन चली है।'' (पचौरी-23)

आज इस वैश्वीकरण के दौर में जिसे हम बाजारवाद कह सकते हैं, वही संस्कृति, वही भाषा फलेगी - फूलेगी, जो बाजार उपलब्ध कराए जो नई-नई परिस्थितियों में भी स्वयं को जीवंत रख सके, जिसकी उपयोगिता हो । डा0 शरण सहेली ने लिखा है कि ''दुनिया की कोई भी भाषा अपनी व्यापक उपयोगिता से ही ताकत बनती है। । हिन्दी ने इस अर्थ में अपनी उपयोगिता को खूब साबित किया है। हिन्दी आज सबसे प्रभावशाली भाषा के रूप में हमारे सामने है। यह हिन्दी की ग्रहणशीलता है, जो नयेपन को उदारता के साथ स्वीकार करती है। इसे न तो नए माध्यमों का दुःख है न ही नए शब्दों और नई भाषाओं से।'' (सहेली - 272)

आज हिन्दी जनभाषा के साथ-साथ राजभाषा भी है तथा विश्व भाषा बनने की ओर अग्रसर है। हिन्दी अपने विकास के सोपानों को चढ़ रही है और यहाँ से उसे आगे भी राह तय करना है। वैश्वीकरण, बाजारवाद, पश्चिमीकरण इत्यादि चुनौतियों का सामना करना है। इसके लिए हमें प्रयास करने होंगे। भारत को आर्थिक रूप से समृद्ध बनाना होगा। अभी तक हिन्दी को विश्व स्तर पर प्रचारित - प्रसारित करने में मीडिया, बाजार और मनोरंजन ने विशेष भूमिका निभायी है, पर और आगे जाने हेतु सरकारी, गैर सरकारी एवं व्यक्तिगत स्तर पर निम्नलिखित प्रयास आवश्यक हैं:-

- सरकारी मोह को त्याग कर सरल, स्वाभाविक, व्यावहारिक हिन्दी को प्रोत्साहित किया जाए। हिन्दी को आम जनता से जोड़ा जाए। उसे जनोन्मुखी बनाया जाए।
- आज विज्ञान के युग में वैज्ञानिक एवं तकनीकी शोधों में हिन्दी को बढ़ाया जाये, ताकि यह विज्ञान की भाषा बन सके।
- शासन एवं सत्ता के क्षेत्र में हिन्दी उपेक्षित है। शासन के तीन स्तंभों- विधायिका, कार्यपालिका एवं न्यायपालिका में हिन्दी को उचित स्थान दिया जाये।
- हिन्दी को रोजगारपरक बनाया जाये ताकि हिन्दी ज्ञान, सत्ता और लाभ की भाषा बन सके।
- सबसे महत्वपूर्ण है कि हिन्दी के प्रति मानसिकता में परिवर्तन लाया जाये। हिन्दी कोई पिछड़ी, अवैज्ञानिक भाषा नहीं है, वरन् यह एक समृद्ध और गतिशील भाषा है।
- हिन्दी में काफी संख्या में सॉफ्टयेवर विकसित हुए हैं, पर अभी आगे और जाना है। अभी और सॉफ्टवेयर विकसित करने की आवश्यकता है।
- हिन्दी को विश्व भाषा बनाने के लिए पहल करनी होगी। संयुक्त राष्ट्र संघ के आधिकारिक भाषाओं में हिन्दी को शामिल करने के लिए हमें मजबूती से अपनी माँग रखनी होगी।
- हिन्दी को प्रचारित - प्रसारित करने के लिए दृढ़ इच्छाशक्ति, व्यापक योजना की आवश्यकता है।
- समय की माँग के अनुसार शब्दकोष को नियमित रूप से संशोधित किया जाय।

शास्त्रों में कहा गया है कि जो देश अपनी भाषा को प्रधानता नहीं देता, वह देश हमेशा के लिए अंधकार में डूब जाता है, और वहाँ स्वतंत्रता या ज्ञान का सूर्य प्रदीप्त नहीं होता।

कहा जाता है कि भाषा का प्रयोग ही उसकी जीवंतता की परिचायक है। अतः आज आवश्यकता है कि हम हिन्दी भाषा का अधिकाधिक प्रयोग करें और इसे विश्व स्तर पर प्रचारित करें।

कहा जाता है कि 19 वीं शताब्दी में फ्रांस का प्रभुत्व था, तो फ्रांसीसी भाषा का सुनहरा काल था, 20 वीं शताब्दी में इंग्लैंड तथा उत्तरार्द्ध में संयुक्त राज्य अमेरिका का वर्चस्व था, तो अंग्रेजी भाषा का सुनहरा काल था। 21 वीं शताब्दी में भारत महाशक्ति है, तो यह शताब्दी हिन्दी भाषा की है। अतः हम कृतसंकल्प होते है कि हिन्दी भाषा को सुनहरा वर्तमान और भविष्य देंगे।

संदर्भ स्त्रोतः

तिवारी, भोलानाथ. (1973). हिन्दी भाषा – उद्‌भव, विकास और स्वरूप, हिन्दी साहित्य का इतिहास, सं. डॉ. नगेन्द्र, इंदिरापुरमः मयूर पेपर बैक्स।

पचौरी, सुधीश. (2012). हिन्दी का नया जनक्षेत्र. नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन।

मलहोत्रा, विजय कुमार (2007). कम्प्यूटर के भाषिक अनुप्रयोग. दरियागंज, नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन।

सहेली. शरण. (2012). विशिष्ट निबन्ध संग्रह. अशोक राजपथ पटना-04 नोवेल्टी एंड कम्पनी।